

HAPPY SCHOOL

Volume 2 - Issue 1&2, July 2019



An inter-State School Magazine

Published by

**Government Model Primary School Ganga Bhogpur
Yamkeshwar - Pauri Garhwal**

पत्रिका के बारे में

“हैप्पी स्कूल” राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक राज्य-स्तरीय ऑनलाइन पत्रिका है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त विचार लेखकों के अपने हैं। अतः यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक लेख में विद्यालय या सम्पादक मंडल अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहे हों।

©2019, पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। बिना किसी पूर्ण लिखित अनुमति के लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक - अकादमिक शोध व प्रशिक्षण

श्रीमती सीमा जौनसारी

निदेशक - प्राथमिक शिक्षा

श्री आर के कुंवर

सहायक निदेशक गढवाल मंडल - प्राथमिक शिक्षा

श्री एस पी खाली

जिला शिक्षा अधिकारी - प्राथमिक शिक्षा

श्री कुंवर सिंह शत

उप शिक्षा अधिकारी - यमकेश्वर

श्री शैलेन्द्र अमोली

प्रधानाध्यापक - रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर

श्रीमती लक्ष्मी पोखरियाल

सम्पादकीय समिति

अकादमिक सम्पादक

डा. अतुल बर्मराड़ा

मुख्य सम्पादक

रेखा पुरोहित

सम्पादक

आशा बिष्ट

सह-सम्पादक

धनेश्वरी रत्नांगी

पूनम बर्मराड़ा



GOVERNMENT MODEL PRIMARY SCHOOL
GANGA BHOGPUR

कुंवर सिंह रावत

जिला शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक)

जनपद-पौड़ी गढ़वाल

फोन नं०-०१३६८-२२२१९९

Email-deobasicpauri@gmail.com

शुभकामना—सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगाभोगपुर, विकास खण्ड यमकेश्वर, जनपद पौड़ी गढ़वाल द्वारा विद्यालय पत्रिका “हैप्पी स्कूल” के द्वितीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस अवसर पर मैं समस्त विद्यालय परिवार को शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

प्रत्येक बच्चा परिवार में, समाज में, कक्षा में, विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है तथा उन्हें शिक्षित करने के बहुआयामी तरीके नवाचार की ओर अग्रसर करते हैं। “हैप्पी स्कूल” पत्रिका भी इसी क्रम में किया गया एक नवाचारी प्रयोग है जो कि बच्चों को स्वनिर्मित कहानी, कविता, चुटकुले, पहेलियां आदि बनाने के लिये एक मंच प्रदान करता है। पत्रिका का एक भाग अध्यापक वर्ग को भी लेखन कला की ओर प्रेरित कर एक अवसर प्रदान करता है जिसके माध्यम से वह अपने विद्यार्थों को जनमानस तक प्रेषित कर सके व भविष्य में यह साहित्य प्रयोग में लाया जा सके।

विद्यालय द्वारा अल्प संसाधनों का प्रयोग कर “हैप्पी स्कूल” पत्रिका का निर्माण किया गया है, जिसे कि विभिन्न तकनीकी माध्यमों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी का उचित प्रयोग कर पत्रिका तक पाठक वर्ग की आसान पहुँच विद्यालय व सम्पादक मण्डल की दूरगामी सोच को प्रदर्शित करती है।

विद्यालय परिवार द्वारा किया जा रहा यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। आशा है आपके द्वारा किये जा रहे इस सराहनीय प्रयास का अनुसरण जनपद के अन्य विद्यालय भी कर सकेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

सादर,

(कुंवर सिंह रावत)

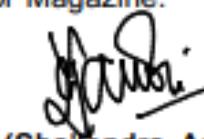
प्रतिष्ठा में,

प्रधानाध्यापिका,
राजसाहित्य गंगाभोगपुर
विकासखण्ड यमकेश्वर
पौड़ी गढ़वाल।

Message

"Success is no accident. It is hard work, perseverance, learning, studying, sacrifice and most of all, love of what you are doing or learning to do". We live today in a world that is so very different from one we grew up in, the one we educated in. The world today is changing at such an accelerated rate and we as educators need to pause and reflect on the entire system of Education. Are our schools well equipped to prepare our children to face the challenges that the future holds? Even as we impart education to match the advancement of Technology and globalization, we march our children ahead with Department of School Education's ethos of moral values and principles. We pride ourselves to help them grow and develop into sensitive and responsible citizens of the future.

We fortunately have a committed and dedicated teaching fraternity with caring and cooperative parents, which blend harmoniously to create a child-centered school at GMPS Ganga Bhogpur. It is natural to find in this ambience, the intensive use of a variety of thinking activities, strategies and group dynamics so that classrooms become alive. The very 3rd issue of the Magazine "Happy School" is a milestone that marks the growth of the School, unfolds the imaginations and gives life to the thoughts and aspirations. It unleashes a wide spectrum of creative skills ranging from writing to editing and even in designing the Magazine. I congratulate the entire team for their hard work and dedication that has resulted in the publication of this issue of the School Magazine.



(Shailendra Amoli)

**Deputy Education Officer
Yamkeshwar - Pauri Garhwal**

सम्पादकीय

शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं या विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है। यदि अर्थ को यहाँ तक सीमित मान लिया जाये तो वह अज्ञान से कुछ ही अधिक हो सकता है और कई बार तो उससे भी अधिक भयावह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ-साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने तथा उनमें से अनुपयोगी को त्यागने एवं उपादेय को ग्रहण करने की ट्रिट का विकास भी होना चाहिए तभी शिक्षा अपने सम्पूर्णता को प्राप्त होती है।

ज्ञान और आचरण में - बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रतुत कर सके उसे ही सही अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है। जब यह सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो शिक्षा अधूरी ही कही जाएगी। आज के सन्दर्भ में देखें तो शिक्षा पद्धति इसी तरह की प्रवंचनाओं से पूर्ण है। छात्रों के सामने परीक्षा पास करने और डिग्री हासिल करने के अलावा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं रहता। फलतः वह अपनी सभी प्रवृत्तियों का केन्द्र परीक्षा पास करना बना लेता है और जब यहीं एकमात्र लक्ष्य रह जाता है तो व्यक्तिव के अन्य पहलुओं पर स्वाभाविक ही विशेष ध्यान नहीं जाता। या यों भी कह सकते हैं कि अन्य पक्ष गौण हो जाते हैं।

इस स्थिति में जीवन-विकास की आधारशिला, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा की जड़ें हिल जाना स्वाभाविक है। सर्वग्राही अनैतिकता के मूल में यदि शिक्षण पद्धति का यह दोष देखा जाए तो कोई अनुचित न होगा और जब सारे समाज के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर अनैतिकता का वातावरण विनिर्मित कर रहे हों तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा पर दोहरी चोट पड़ती है।

इस स्थिति के लिए विद्यार्थी इतने दोषी नहीं हैं, जितनी कि शिक्षा-पद्धति। प्रचलित शिक्षण-पद्धति छात्रों के सामने कोई ध्येय, कोई आदर्श उपरिथित नहीं कर पाती या कहना चाहिए वह ध्येयहीनता के अंधकार में धकेलती है। तो उस स्थिति में जो ज्ञान जीवन को सुसज्जित और सुरक्षित बनाता है वह ज्ञान कहाँ उपलब्ध हो पाता है? कहा जा चुका है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्बन्ध विकास है। शिक्षा इसी उद्देश्य की ओर जरा भी उन्मुख हो तो ध्वंस की अपेक्षा सृजन की प्रेरणा ही जागेगी और ध्वंस का आयोजन करना भी पड़े तो वह सृजन की पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिए ही अनिवार्य होगा।

इस संदर्भ को समृद्धि में रखने के लिए प्रचलित शिक्षा-पद्धति में आवश्यक सुधार करना ही एकमात्र उपाय है और वह सुधार इस सिद्धांत को केन्द्रों में रखते हुए ही सम्भव है कि शिक्षा का उद्देश्य कोई सूचनाएं या जानकारियाँ देना मात्र नहीं है, वरन् व्यक्तित्व का सम्बन्ध विकास करना है।

इस अंक में

छात्र परिणिष्ठ

कविता

गुलाब	कनक	7
जानवरों की सभा	इशिता रणाकोटी	7
सर्दी आई	उज्जवल शर्मा	8
चिड़िया रानी	श्रेया शर्मा	8
मेरा भारत	कुमारी रिया	8
वीरों का जज्बा	अभिषेक मोहन	9
मेरा गाँव गंगा भोगपुर	उज्जवल शर्मा	9
आ रे बादल	विपुल	10
तितली	साक्षी	10
मोर	सुजल बिष्ट	11
हाथी	गीत	11
बीज	पवन सैनी	11
मां	मवाजिस	12
गुरुजी	हिमांशी	12
पठाड़	मानसी रावत	13
Save Water	Himanshi	13
वीर सौनिक	कुलदीप रावत	14

अनुभव आधारित कहानी

शौर्य दिवस	श्रद्धा पोखरियाल	14
कौन ज्यादा बलवान	विशाल आर्य	14
छपरा की कहानी	राधिका शर्मा	15
मै मरा तो तुम भी मरोगे	विवेक शर्मा	16
पहेलियों का संसार	प्रियांशु रावत	9
शौर्य दिवस	श्रद्धा पोखरियाल	14

अध्यापक परिषिष्ठ

कविता

पुरतक हूँ मैं पुरतक हूँ	आशा बिष्ट	17
स्कूल चलें हम	धनेश्वरी रत्नडी	17
शिक्षा का अधिकार	अंजना जुयाल	18
ओरिनौमी	राजीव थपलियाल	19

Creativity	21
Clicks	30
Printmedia	36
School's Innovative Practices	40
Grade Toppers of Session 2018-19	41
लेखों हेतु आमंत्रण (जनवरी 2020 अंक हेतु)	43

गुलाब

कनक | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुग्डा)

गर्मी का मौसम है देखो

गर्मी का मौसम है

दिन भर सूरज आग उगलता

गर्म हवा का झोंका चलता

दिन भर होती बैचैनी

निकला सबका दम है

गर्मी का मौसम है देखो

गर्मी का मौसम है

बार-बार लग जाती प्यास

अब मान भाये लससी-छांछ

आइसक्रीम कुलफी खाने को

देखो बढ़े कदम हैं

गर्मी का मौसम है देखो

गर्मी का मौसम है



जानवरों की सभा

इशिता रणाकोटी | कक्षा 3 | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

यह मत सोचो कि मैं,

सर्क्स में बहुत खुश हूँ.

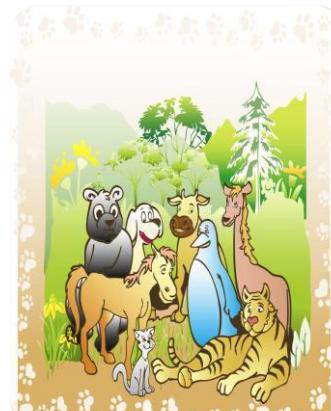
नाचो-कूदो आग के गोले में से निकलो
और भी ना जाने क्या-क्या

ना करो तो भूखे रहो

और पिटाई अलग से

यह मत सोचो कि मैं,

सर्क्स में बहुत खुश हूँ.



सर्दी आई

उज्जवल शर्मा | कक्षा 4 | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

सर्दी आई सर्दी आई
ठण्ड के पहने वर्दी आई
सबने लाटे छेर से कपडे
चाहे दुबले चाहे तगड़े
नाक सभी की लाल हो गई
सिकुड़ी सबकी चाल हो गई

चिड़िया रानी

श्रेया शर्मा | कक्षा 4 | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

चिड़िया रानी – चिड़िया रानी
नींद सवैरे हमें जगाती
पेड़ों की डाली में.
इनका बसेरा
सांझ झुके ये सो जाती
चिड़िया रानी – चिड़िया रानी
चिड़िया रानी – चिड़िया रानी

मेरा भारत

कुमारी रिया | कक्षा 6 | रा. इं. का. सिलोनी (द्वारीखाल)

मेरा भारत मेरी शान
बढ़ता रहे भारत का मान;
बच्चे बूढ़े और जवान
बढ़ता रहे भारत का मान ;
यह धरती निराली है
इसमें उनी हरियाली है;

वीर सपूत्र देश की शान
बढ़ता रहे भारत का मान;
बच्चे बूढ़े और जवान
बढ़ता रहे भारत का मान

वीरों का जज्बा

अभिषेक मोहन | कक्षा 10 | या.इं.का. सिलोगी (द्वारीखाल)



बूढ़ा हुआ तो क्या हुआ,
देश भक्ति है सीने में;
मजा क्या आता है लोगों को,
कायरों सा जीने में;
उन आतंकियों को देखो,
जो घुसपैठ करते हैं भारत में;
उन वीर शहीदों को याद करेंगे,
उन की शहादत में;
एक दिन वो आएगा,
जब मैं सैनिक बन जाऊंगा;
दुश्मन के देश में जाकर,
दुश्मन को मार गिराऊंगा
दुश्मन को मार गिराऊंगा

मेरा गाँव गंगा भोगपुर

उज्जवल शर्मा | कक्षा 4 | या.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

मेरा गाँव जैसा सुंदर कहीं कोई ना गाँव है
कोई ना इसका मोल कोई ना भाव है
सुन्दर सलोने बच्चे सारे मरती करते हैं

जहां सुनाते अवसर कहानियां, बूढ़े और बुजुर्ग हैं
 पोखर, खेत, खलिहान कहीं मंदिरों के मन्त्र हैं
 शहद सी मीठी बोली सबकी – ना कोई देष किसी से है
 मिल-जुलकर प्यार से रहना ही इसकी पहचान है
 मेरा गाँव जैसा सुंदर कहीं कोई ना गाँव है

आ-रे बादल

विपुल | कक्षा 3 | या.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगड़ा – पौड़ी)

आ-रे बादल, आ-रे आ
 ठंडा-ठंडा जल बरसा
 बदल तू पूरब से आ
 बादल तू पश्चिम से आ
 आ-रे बादल, आ-रे आ
 ठंडा-ठंडा जल बरसा
 उमड़-घुमड़कर तू छा जा
 ऊपर से धरती पर आ
 आ-रे बादल, आ-रे आ
 ठंडा-ठंडा जल बरसा



तितली

साक्षी | कक्षा 3 | या.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगड़ा – पौड़ी)

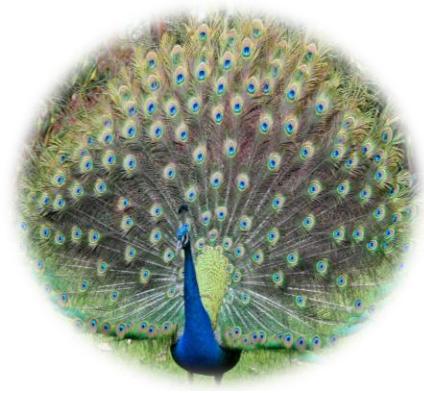
फूलों से भी सुन्दर तितली
 फूलों पर इठलाती हो
 कब से तम्हे पुकार रहा हूँ
 पास ना मैरे आती हो
 रंग बिरंगे पंख तुम्हारे
 सोने से चमकीले हैं

रंग तुम्हारे कितने सुंदर
कैसे रंग-रंगीते हैं

मोर

सुजल बिष्ट | कक्षा 3 | रा.आ.प्रा.वि. सुखरयौं देवी (दुगड़ा – पौड़ी)

मेरी छत पर आया मोर
कल भी छत पर आएगा
जैसा उसने नाच दिखाया
कल भी नाच दिखाएगा
रंग-बिरंगे पंखों वाला
पंखों को फैलाएगा
आज मुझे वो पंख दे गया
कल भी कुछ दे जाएगा



हाथी

कु. गीत | कक्षा 1 | रा.आ.प्रा.वि. सुखरयौं देवी (दुगड़ा – पौड़ी)



हाथी आया झूम के
धरती मिट्ठी चूम के
कान हिलाता पंखों जैसा
हाथी मोटा ऊंचा कैसा

बीज

पवन सैनी | कक्षा 5 | रा.आ.प्रा.वि. सुखरयौं देवी (दुगड़ा – पौड़ी)

बीज हूँ मैं बीज हूँ
बड़े काम की चीज हूँ

बीज से बनता नन्हा पौधा
पौधे से फिर बड़ा वृक्ष
जल, प्रकाश, खाद और प्यार
यह है मेरा सदा आहार

मेरी करो तुम देखभाल
इस धरती को रखो सदा खुशहाल

मां

मवाजिस | कक्षा 3 | रा.आ.प्रा.वि. सुखराँ देवी (दुगड़ा – पौड़ी)

मां हमारी कितनी प्यारी
करती रहती हरदम काम
कितनी प्यारी कितनी भोली
हरदम रखती हमारा ध्यान
मां के चरणों में यह संसार हमारा
मां की ओँखों के हम तारे
नन्हे-नन्हे राज दुलारे
हम सबकी तू प्यारी-प्यारी
इस जग में तू सबसे न्यारी

गुरुजी

ठिमांशी | कक्षा 5 | रा.प्रा.वि. डंडधार (नैनीडांडा)

गुरुजी हमारे अच्छे होते हैं
गुरुजी हमे पढ़ाते हैं
गुरुजी हमें शिक्षा देते हैं
गुरुजी हमें बनाते हैं
गुरुजी सुंदर तो सब सुंदर
गुरुजी हमें आगे बढ़ाते हैं

हमें देते विद्या का दान
गुरुजी हमारे बड़े महान

पहाड़

मानसी यावत | कक्षा 4 | रा.प्रा.वि. डंडधार (नैनीदांडा)

पहाड़ कितने ऊँचे होते हैं
पहाड़ कितने अच्छे होते हैं
पहाड़ के चारों तरफ पेड़ होते हैं
पहाड़ हरे-भरे होते हैं.



पहाड़ से ही नदियाँ निकलती हैं
पहाड़ सबसे ऊँचे होते हैं
पहाड़ लम्बे-लम्बे होते हैं
पहाड़ के नीचे घर होते हैं.

पहाड़ में ही हम रहते हैं
उत्तराखण्ड वालों को पहाड़ी कहते हैं.

SAVE WATER!

Himanshi | Grade 5 | GPS Danddhar (Nainidanda)

Save Water, Save Water
Brother-Sister, Save Water,
Son & Daughter, Save Water,
Father-Mother, Save Water,
Uncle & Aunt, Save Water,
Water is Life, Life is Water,
Life on Earth is due to Water
Save Water, Save Water.



वीर सैनिक
कुलदीप यावत | कक्षा 5 | या.प्रा.वि. डंडधार (नैनीडांडा)

वीर सैनिक देश की शान
बचाते हैं हम सबके प्राण ;
देश को है तुम पर मां
वीर सैनिक तुम हो महान.

मैं भी देश की रक्षा करूँगा
बड़ा होकर सैनिक बनूँगा;
सदा रखूँगा देश का मां
वीर सैनिक तुम्हे प्रणाम.

शौर्य दिवस
शृङ्खा पोखरियाल | कक्षा 5 | या.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

26 जुलाई 1999 का दिन भारतवर्ष के लिए एक ऐसा गौरव लेकर आया, जब हमने सम्पूर्ण विश्व के सामने अपनी विजय का बिन्दु बजाया था। इस दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाये गए आपरेशन विजय को सफल किया, यह लड़ाई 60 दिनों तक चली। इसी की याद में अब हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस युद्ध में लगभग 520 सैनिक शहीद हुए थे।

कौन ज्यादा बलवान
विशाल आर्य | कक्षा 4 | या.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक समय की बात है कि सूरज व हवा की लड़ाई हुई। हवा ने कहा कि मैं तुमसे ज्यादा ताकतवर हूँ और सूरज ने कहा कि मैं ज्यादा ताकतवर हूँ। तभी अचानक हवा की नजर एक राह चलते आदमी पर पड़ी और हवा ने सूरज से कहा कि जो

कोई उस आदमी का कोट निकाल देगा वह ज्यादा बलवान होगा। तो पहले हवा ने अपनी पूरी ताकत लगाई पर उस आदमी ने अपना कोट और जोर से पकड़ लिया। फिर आखिर में हवा ने हार मान ली। उसके बाद फिर सूरज ने पहले तो मौसम को ठीक-ठाक किया और फिर अपनी गर्मी बढ़ाई और फिर उस आदमी ने गर्मी के मारे अपना कोट उतार दिया।

शिक्षा – प्रत्येक जीव की अपना-अपना महत्व होता है। जो कार्य सूरज नहीं कर सकता वह हवा कर सकती है और इसी तरह जो कार्य हवा नहीं कर सकती वो सूरज कर सकता है।

छपरा की कहानी

विशाल आर्य | कक्षा 5 | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक छोटा सा गाँव था जिसमें एक लड़का छपरा रहता था। वह बहुत ही समझदार था और उसे पढ़ाई में कोई हरा नहीं सकता था। वह अपने परिवार से भी बहुत प्यार करता था। एक बार उसकी बहुत तबियत खराब हो गई और उसके पिता उसे कर्स्बे के किसी अस्पताल में उपचार हेतु ले गए। डाक्टर ने कहा कि धूप व गर्मी के कारण बच्चे के शरीर में पानी की बहुत कमी हो गई है और इसे कुछ दिन के लिए अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा। भर्ती करने के बाद डाक्टर ने बच्चे को दवा के साथ-साथ जूस व मौसमी फल खाने की सलाह दी। कुछ दिन उपचार चलने के बाद छपरा पूर्ण रूप से रक्षित हो गया और रक्कूल जाने लगा। रक्कूल में उसने अपने दोस्तों को भी जूस व मौसमी फल खाने की सलाह दी और उन्हें बताया कि डाक्टर ने उससे कहा है कि हमें रोज मौसमी फल, मौसमी शब्जियाँ, दूध, मट्ठा आदि का सेवन करना चाहिए। इन सबका सेवन करने से हमारे शरीर में रफूर्ति व योगों से लड़ने की क्षमता का विकास होता है।

मैं मरा तो तुम भी मरोगे.....

विवेक शर्मा | कक्षा 5 | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

वाह! कितना बड़ा और सुन्दर पेड़ है. अगर मैं इस पेड़ को काटकर इसकी लकड़ियाँ बाज़ार में ले जाकर बेचूँ तो बहुत पैसे मिलेंगे. चलो मैं इसे काट लेता हूँ, वरना इसे कोई और काट लेगा. जैसे ही मैंने पेड़ काटने की तैयारी की, वैसे ही एक आवाज आई – “बचाओ ...बचाओ...” मैं घबरा गया कि इस घनधोर जंगल में ये आवाज कहाँ से आई. तभी फिर से आवाज आई, “मैं पेड़ हूँ. तुम मुझे क्यों काट रहे हो”.

मैं – मैं तुम्हे पैसे के लिए काट रहा हूँ.

पेड़ – उससे तुम क्या करोगे.

मैं – अपने बच्चों के लिए घर बनाऊंगा, कपड़े खरीदूंगा, और अपनी पत्नी के लिए गहने खरीदूंगा. इससे मेरा परिवार बहुत खुश हो जाएगा.

पेड़ – अरे मूर्ख! इन सब चीजों के लिए तुम मुझे काट रहे हो. कभी सोचा है कि जो हवा तुम महसूस कर रहे - वो मैं ही देता हूँ, जो पानी तुम पीते हो - वह भी मेरी ही जड़ों से आता है, जो फल तुम खाते हो - वह भी मेरी ही टहनियों पर लगते हैं. सोच लो कि अगर मुझे काटोगे तो यह सब भी युहे मिलना बंद हो जाएगा और इन सबके के बिना मरोगे तुम भी. हाअ....हाअ....हाअ....हाअ....हाअ....

मैं – अरे मैं कितना मूर्ख हूँ. यह सब तो कभी मैंने सोचा ही नहीं. तुमने मेरी आँखें खोल दी. आज के बाद मैं कभी पेड़ नहीं काटूंगा और नाहीं किसी को पेड़ काटने दूंगा. और कोशिश करूंगा के अपने आस-पास ज्यादा से ज्यादा पेड़ तगाऊं जिससे आने वाली पीढ़ी को भरपूर हवा, पानी व फल मिल सकें.

पुस्तक हूँ मैं पुस्तक हूँ आशा बिष्ट | सहायक शिक्षिका (हिन्दी) | या आ प्रा वि गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

पुस्तक हूँ मैं पुस्तक हूँ
रंग-बिरंगे चित्रों वाली
कुछ कहानी, कुछ कविता वाली
कई साइज़ में आने वाली

मुझ से मिलता ज्ञान है
द्वेरों गुणों की खान है
मुझ को पढ़ते बुद्धिमान हैं
जड़मति होत सुजान हैं



मुझ को तुम पढ़ते जाओ
जीवन में आगे बढ़ते जाओ
हिमालय सा बनो महान
दुनिया करे तुम्हारा गुणगान

पुस्तक ना देखे जात और पात
सबको समझे एक साथ
समरसता का पाठ पढ़ाएं
तिथ में अपना नाम कमायें

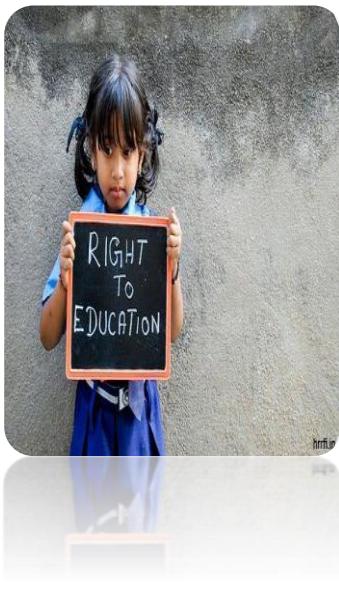


स्कूल चलै हम धनेश्वरी रत्नांजलि | या आ प्रा वि गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

नई सुबह आई है, नई राह लाई है
पढ़ना हो गया आसान, पढ़ने का ना कोई सामान
बोझ हो गया कम
स्कूल चलै हम, स्कूल चलै हम

नई कक्षा में जाएँ, खुशियाँ हम मनाएं
 ई-लर्निंग से अपनी, शिक्षा आसान बनाएं
 बाहरी दुनिया से अपने जीवन को जोड़ें हम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम

चीजों को करके सीखें
 तर्क शक्ति को अपनी मजबूत हम बनाएं
 लिंग भेद और रटने से खुद को दूर भगाएं
 गाँव का हुर बच्चा रखें, नई शिक्षा में कदम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम



शिक्षा का अधिकार

अंजना जुयाल | रा.प्रा.वि. मरणदना (विकासखंड-पौड़ी)

माँ मुझको बस्ता मंगवा दे
 मै भी पढ़ने जाऊंगा;
 अब तुम मुझे नन्हा ना समझना
 मै अब छात्र कहलाऊंगा;
 न तो प्रवेश शुल्क पड़ेगा
 और न पड़ेगा मासिक शुल्क;
 पुस्तक और गणवेश की भी
 व्यवस्था होगी बिलकुल मुफ्त;
 जाति -पांति का भेद ना होगा
 होगी ना कोई धर्म दीवार ;
 पढ़ लिखकर मै योन्य बनूंगा
 आया शिक्षा का अधिकार ;
 निर्धनता आड़े ना आये
 और ना आड़े अक्षमता ;
 लिंग भेद भी समाप्त हो गया
 शिक्षा की हुई ऐसी व्यवस्था;

शिक्षित जोकर बड़ा बनूंगा
जानूंगा कर्तव्य व अधिकार;
निज परिवार के पालन के संग
बनूंगा देश का भी कर्णधार;
मां मेरे सपने पूरे कर
मानूं मैं तेरा उपकार;
सपने आवश्य ही पूरे होंगे
आया शिक्षा का अधिकार.

ओरीगैमी

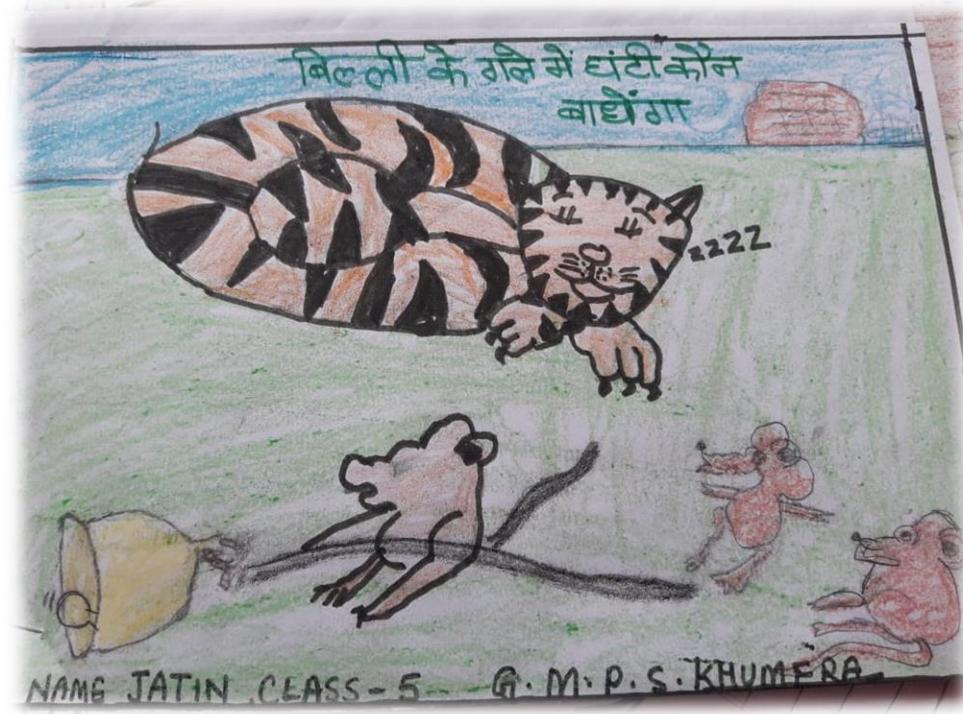
यजीव थपलियाल – सहायक अध्यापक (गणित)
रा.आ.प्रा.वि. सुखराँ देवी (दुगइडा)

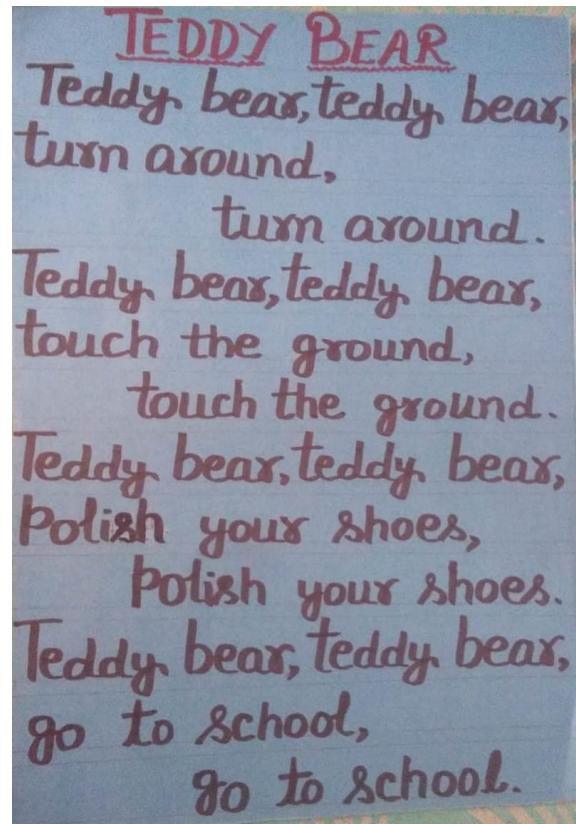
पिछले साल बसन्त माह मे हो रही एक कार्यशाला के दौरान सन्दर्भ व्यक्ति ने समूह से पूछा कि “कागज के एक नियमित टुकड़े से हम क्या-क्या कर सकते हैं ?” पर शर्त यह है कि कैंची और गोंद का इस्तेमाल नहीं करना है और संदर्भदाता ने साथ-साथ सबको कुछ अखबार के छोटे छोटे टुकड़े भी दिए. बस फिर क्या था, सभी जुट गये काम पर और कुछ समय पश्चात ज्यादातर साधियों ने हवाई जहाज बनाकर हवा में उड़ाने और कागज की कशितियाँ बनाकर दिखाई. मैंने भी कुछ देर तक जूझने के बाद एक तितली व कूटने वाला मेंढक बना दिया था. दरअसल बचपन में दोस्तों के साथ खेल-खेल में अनायास ही बहुत बार मैं यह बना चूका था, पर उस दिन कुछ और ही रोमांच था और उसी दिन पता लगा कि रंग बिरंगे कागजों को अलग-अलग ढंग से मोड़कर उन पर अलग-अलग रूपों से कलाकृतियाँ बनाने के इस ढंग को ओरिगैमी के नाम से जाना जाता है. इसके लिए किसी तिशेष प्रतिभा की आवश्यकता नहीं होती. हमे गणित के प्राथमिक सिद्धांतों के बारे में केवल थोड़ा धैर्य और ज्ञान की आवश्यकता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सिर्फ हाथ में एक पेपर सीट और कुछ नहीं. इसके बाद हमने सन्दर्भ व्यक्ति कि सहायता से ट्रैफिक लाईट, कप, कैडल, कम्प्यूटर, तितलियाँ व गणित जी समेत कई डिजाइन बनाए, जो सभी को आकर्षित कर रही थी. उन्होंने यह भी बताया कि इस ओरिगैमी का सबसे पहले उपयोग जापान से हुआ जिसका अर्थ ‘कागज को मोड़ना’ है, जिसका उपयोग घरों को सजाने में किया जाता है.

प्रशिक्षण के दौरान सीखी हुई इस विधा से निःसंदेह मेरे सौन्दर्यात्मक बोध व कौशल को एक पायदान आगे ही बढ़ाया और साथ ही एक नए नजरिये का निर्माण हुआ कि कैसे ज्यामिति और कला का समावेश हुआ है. सीखी हुई इस विधा को मैंने सबसे पहले अपने स्कूल के बच्चों के साथ

साझा करने का प्रयास किया. मैंने यह पाया कि बच्चों के अंदर एक अलग ही कौतूहल था. बस फिर क्या था – लग गए बच्चों के विचारों को पंख और उड़ने लगे रचनात्मकता की अनंत यात्रा पर. पीयूष पहले तो अभिषेक को देखता रहा पर जब अभिषेक ने नुकीली सी टोपी बना ली तो पीयूष ने सोचा कि गुरुजी तो गोल टोपी पहनते हैं तो मैं उनके लिए गो टोपी बनाऊं. ऐसुका जहां तो ज्ञालर बनाने में व्यस्त रही वहीं पवन बैट और आयुष तितली बनाने की कोशिश कर रहा था. छुट्टी होते-होते बच्चों ने बहुत सी कलाकृतियाँ बना डाली. कुछ बच्चे टोपी पहनकर घर जा रहे थे तो उनमें एक आत्मसंतोष का भाव था और मुझे आनंदक संतोष भी.

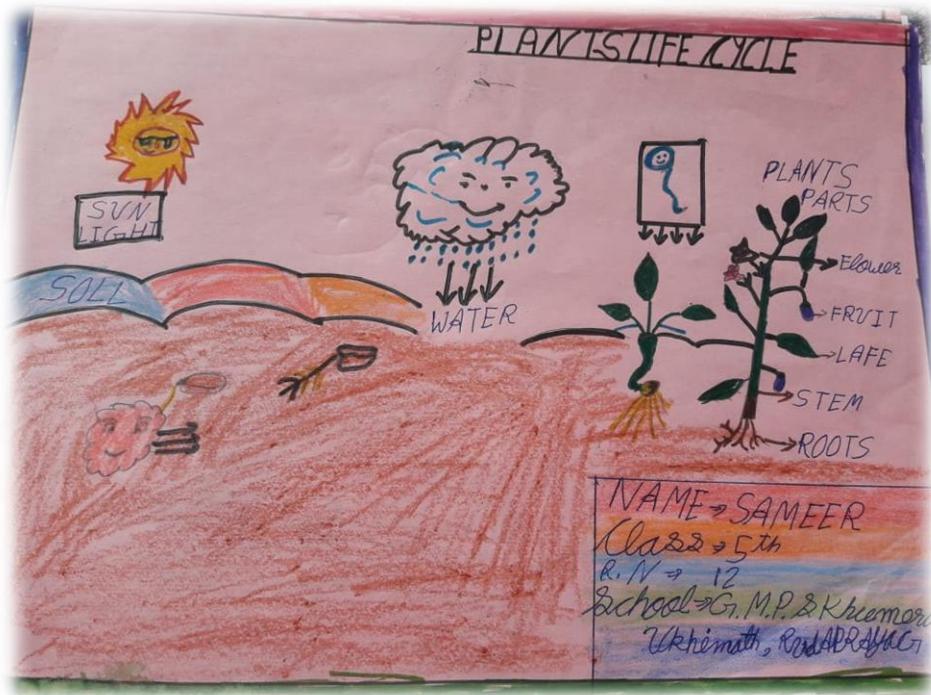
Creativity

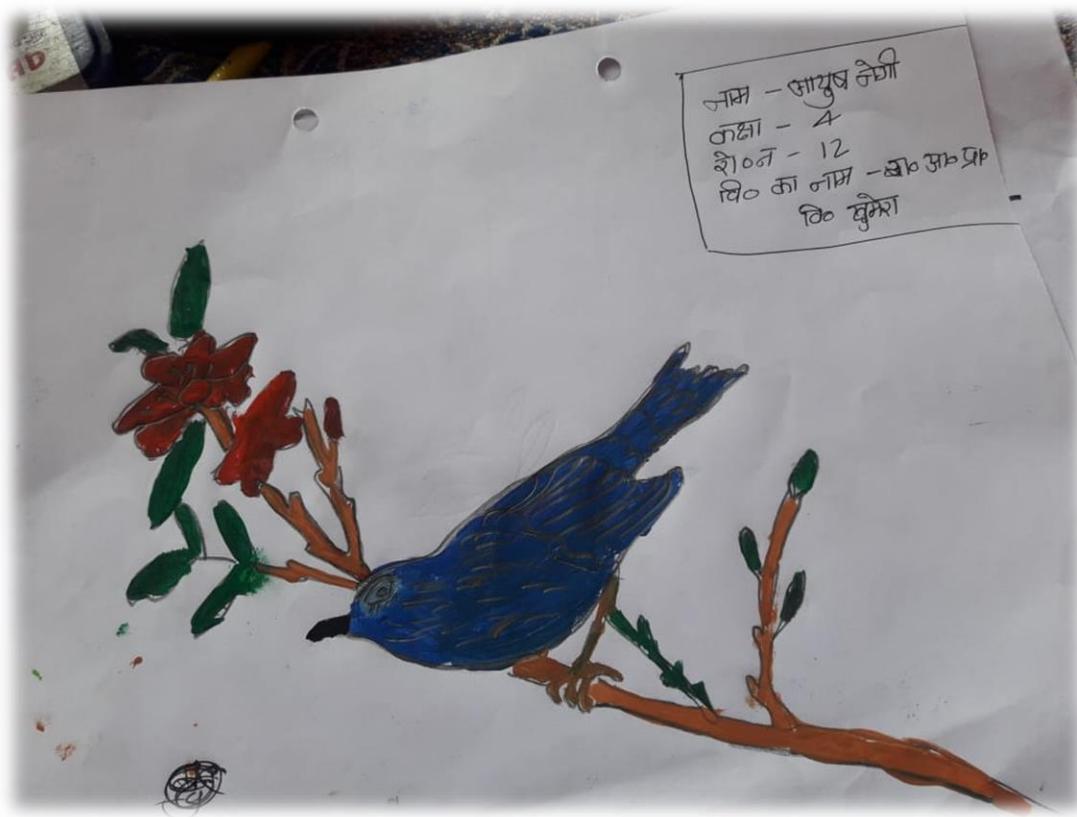
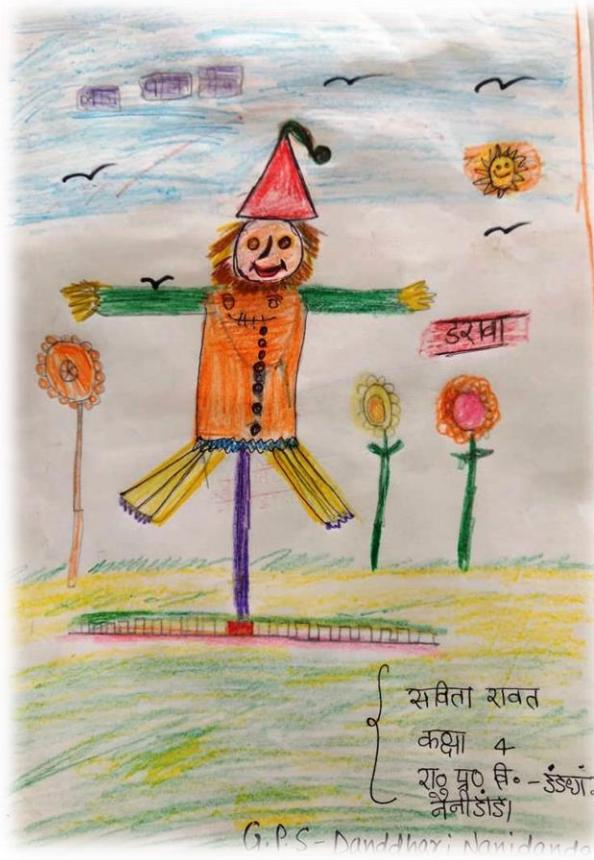


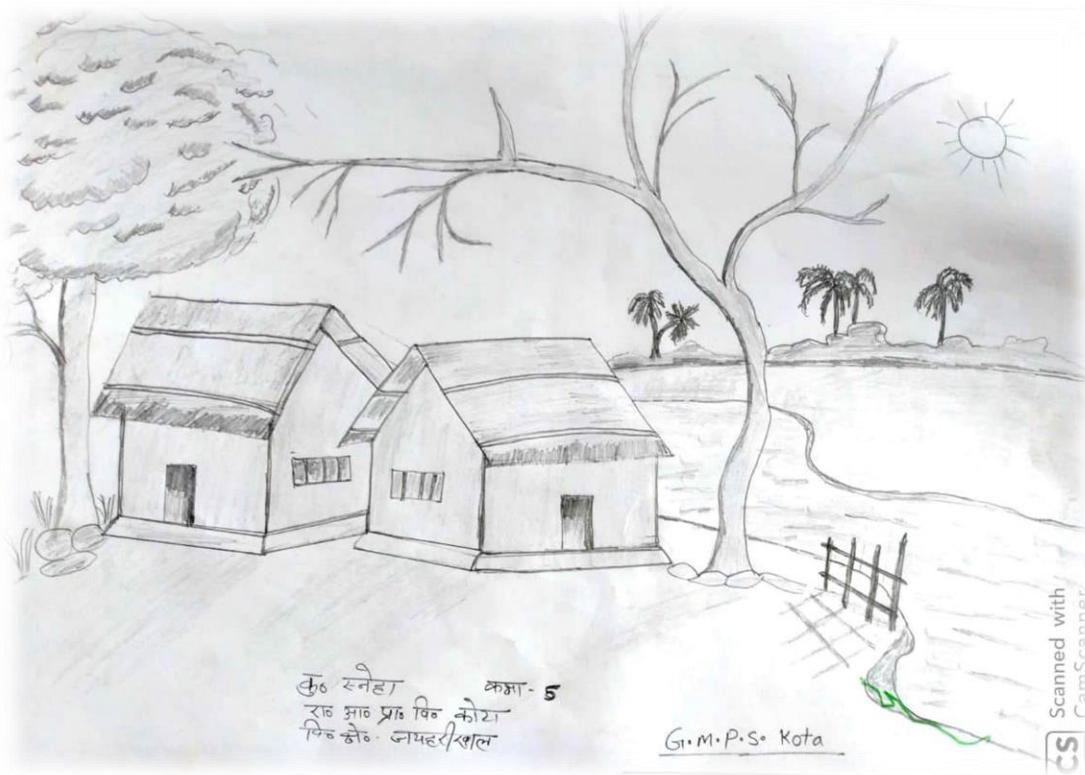


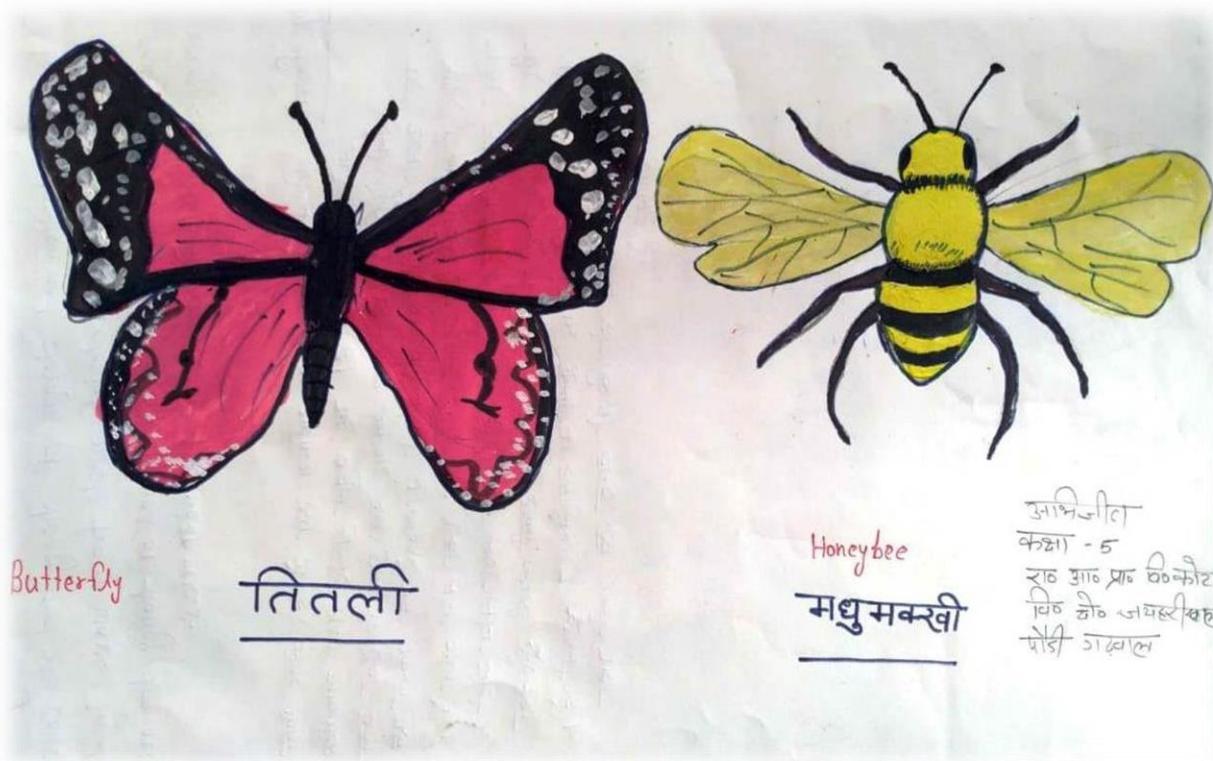












Clicks











Printmedia

खेल-खेल में सुलझाई गणित की पहेली

अमर उजाला ब्यूरो

ऋषिकेश। गणित विषय को रोचक व आसान बनाने के लिए राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर में एक नयी पहल शुरू की गई। इसमें पहेली के माध्यम से गणित के सवालों को हल करने की तकनीक सिखाई गई।

गणित के शिक्षक डॉ. अतुल बमराड़ा ने बताया कि पहेली के समाधानों को प्रायः पैटर्न की पहचान और विशेष प्रकार की तार्किक क्षमताओं की आवश्यकता होती है। उच्च स्तर की तर्क योग्यता वाले लोग अपने अन्य सहपाठियों की तुलना में पहेलियों को

गणित को रोचक बनाने के लिए राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय की अनोखी पहल

हल करने में बेहतर हो सकते हैं, लेकिन पूछताछ और खोजबीन के आधार पर भी किसी कठिन पहेली को उच्च गणितीय कौशलों द्वारा आसानी से हल किया जा सकता है।

इस अवसर पर कक्षा चार व पांच के छात्र नंदिनी, वैशाली, आदित्य, अमन, विवेक द्वारा पहेलियां भी बनाई गई। डॉ. बमराड़ा द्वारा बच्चों को पहेलियों को हल करने के विभिन्न तरीके सिखाये गए।

बच्चों को जापानी तकनीक से सिखा रहे गणित



ऋषिकेश | हमारे संवाददाता

राजकीय आदर्श विद्यालय गंगा भोगपुर में बच्चों को जापानी तकनीक से गणित की शिक्षा दी जा रही है। शुक्रवार को विद्यालय के बच्चों ने जापानी तकनीक ओरिगेमी का प्रयोग कर टू-डी और श्री-डी आकृतियों का निर्माण किया।

शुक्रवार को यमकेश्वर के दुर्गम क्षेत्र गंगा भोगपुर स्थित राजकीय आदर्श विद्यालय के गणित शिक्षक डा. अतुल बमराड़ा ने बताया कि बच्चों को पढ़ाने के लिए उन्होंने एक अनोखी जापानी तकनीक का सहारा लिया है। बताया कि

शिक्षा

- आदर्श विद्यालय गंगा भोगपुर में दी जा रही जापानी तकनीक से शिक्षा
- जापानी तकनीक से बच्चों को गणित पढ़ा रहे डा. अतुल बमराड़ा

ओरिगेमी नामक यह तकनीक जापान में विकसित की गई है, जिसका अर्थ है कागज को मोड़ना। अक्सर गणित विषय में ज्यामितीय विधाओं की उचित समझ न होने के कारण विद्यार्थी व्यावहारिक जीवन में इसका प्रयोग नहीं करते और निर्देशांक ज्यामिति जैसे महत्वपूर्ण विषय में रुचि विकसित नहीं कर पाते हैं।

बताया कि इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाने वाले छात्रों के लिए ओरिगेमी की कला का ज्ञान आवश्यक है। क्योंकि उन्हें अपने कार्य करने के लिए डिजाइन का सहारा लेना पड़ता है।



यमकेश्वर के गंगा भोगपुर में शुक्रवार को राजकीय विद्यालय में जापानी तकनीक ओरिगेमी का प्रयोग कर विभिन्न आकृतियां बनाते बच्चे। • हिन्दुस्तान

छात्र उज्ज्वल शर्मा, विवेक शर्मा, अधिष्ठेक रणाकोटी, वैशाली आर्य और आदित्य पोखरियाल ने ओरिगेमी का प्रयोग और अपनी तार्किक क्षमता के प्रयोग से विभिन्न टू-डी और श्री-डी आकृतियों का निर्माण किया।

राजकीय आदर्श विद्यालय में ई-लाइब्रेरी शुरू

अमर उजाला ब्यूरो

मुनिकीरेती। राजकीय आदर्श विद्यालय गंगा भोगपुर में ई-लाइब्रेरी का शुभारंभ किया गया। विद्यालय के शिक्षक डॉ. अतुल बर्मराड़ा ने बताया कि प्रत्येक क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग की कार्यप्रणाली को सुगम व पारदर्शी बनाया जा रहा है। इसी सपने को साकार करते हुए सरकारी खर्च से चलने वाले किसी भी प्राथमिक विद्यालय की ओर से शुरू की गई यह प्रदेश की पहली ई-लाइब्रेरी है। विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षणेत्र गतिविधियों की समस्त जानकारी इस ई-लाइब्रेरी में उपलब्ध है।

पारंपरिक पुस्तकालय की भाँति कक्षा एक से पांच तक के एनसीईआरटी की पुस्तकें, मासिक परीक्षा के हल व शैक्षिक नवाचारों

हिंदी भाषा में पाठ्य सामग्री की भरमार, आसानी से किया जा सकता है अपलोड

को इस लाइब्रेरी में अपलोड किया गया है। इस लाइब्रेरी का प्रयोग वर्तमान में भारत के सभी हिंदी भाषी राज्यों के शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों की ओर से निशुल्क किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

बताया कि विभिन्न पोर्टल व यू-ट्यूब पर अंग्रेजी भाषा में सामग्री की भरमार है। हिंदी भाषा में गुणवत्तापरक सामग्री का अभाव रहता है। वर्तमान में यह समस्त सामग्री विद्यालय के यू-ट्यूब चैनल जीएमपीएस गंगा भोगपुर से निशुल्क अपने स्मार्ट फोन, डेस्कटॉप, टेबलेट पर आसानी से अपलोड की जा सकती है।

बच्चों को दी विविक रिस्पांस कोइस की जानकारी

ऋषिकेश। राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर में कार्यशाला का आयोजन कर बच्चों को जागरूक किया गया। कार्यशाला के संयोजक डॉ. अतुल बर्मराड़ा ने बच्चों को विविक रिस्पांस कोइस को स्कैन कर इसका उपयोग करना सिखाया। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा विभाग में एनसीईआरटी की गणित, हिंदी, अंग्रेजी व हमारे आसपास पुस्तकों में इन कोइस को समाहित किया गया है, जिसे सीआईईटी की ओर से विकसित ई-पाठशाला एप पर मैप किया गया है। शिक्षकों व अभिभावकों को इस तकनीक का प्रयोग करने के लिए विद्यालय के यू-ट्यूब चैनल पर संबंधित वीडियो से मदद मिल सकेगी। ब्यूरो

प्राथमिक
विद्यालय
गंगा भोगपुर
में कार्यशाला
का आयोजन



आदर्श प्रावि गंगा भोगपुर को अमेरिकी कंपनी ने सराहा

ऋषिकेश : राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर की शिक्षा प्रणाली को अमेरिका की एक सुप्रसिद्ध कंपनी ने सराहना की है। विद्यालय को भेजे प्रशंसा पत्र में कंपनी ने विद्यालय में प्राइवेट स्कूलों जैसे पटन-पाठन की अत्याधुनिक सुविधाएं व सूचना तकनीकी संसाधनों के प्रयोग को एक अभिनव प्रयोग बताया है। गौरतलब है कि विद्यालय में गणित के अध्यापक डॉ. अतुल बमराडा ने विगत दो वर्षों के अथक प्रयास से इस विद्यालय को डिजिटल इंडिया से जोड़कर विद्यालय में शैक्षणिक वातारण व क्रिया-कलाणों में गुणात्मक सुधार किये हैं। इसी क्रम में सैन प्रांसिस्को अमेरिका स्थित कंपनी इस्पलैष मेथ ने विद्यालय को भेजे अपने प्रशंसा पत्र में कंपनी द्वारा बताये जा रहे ऑनलाइन गणित कार्यक्रम में विद्यार्थियों की सहभागिता को सराहा है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अतुल बमराडा ने बताया कि गणितीय ई-फॉट निर्माण व नवाचारी शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यालय अपने यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से निरंतर सेवाएं प्रदान कर रहा है। (जासं)

आदर्श विद्यालय के बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

ऋषिकेश : यमकेश्वर प्रखंड के गंगा भोगपुर स्थित आदर्श प्राथमिक विद्यालय के बच्चों ने दिल्ली में आयोजित एक पृथ्वी कार्यक्रम में पर्यावरण पर आधारित मॉडल और चित्रकला की बेहतर प्रस्तुति देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शिक्षक डॉ. अतुल बमराडा की अगुआई में राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर के पांच छात्र व हिंदी अध्यापिका आशा विष्ट ने दिल्ली स्थित इंडिया हैविटेट सेंटर में आयोजित एक पृथ्वी कार्यक्रम में उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण के प्रति प्रेम व संचेतना का विकास करना है। विद्यालय के आदित्य पोखरियाल, कृष्णा, विवेक, सोनम व कंचन ने पर्यावरण व वन मंत्रालय से आए हुए पर्यावरण शिक्षा विशेषज्ञों के सवालों का जवाब दिया। आदर्श विद्यालय की ओर से पर्यावरण संरक्षण पर आधारित नाटक को निर्णायक मंडल ने प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया। खंड शिक्षा अधिकारी अमित कोटियाल, प्रधानाध्यापिका लक्ष्मी पोखरियाल, कार्यक्रम समन्वयक पंकज जोशी, रेखा पुरोहित व धनेश्वरी रतूड़ी ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

School's Innovative Practices

विद्यालय में किये गये नवाचारी प्रयोग



Figure 1 Scan to Visit our Face Book Page
<https://bit.ly/2N5bvGG>



Figure 2 Scan to Visit our YouTube Channel
<https://goo.gl/3rFqE4>



Figure 3 Scan to View the Magazine Online
<https://goo.gl/oLmebd>



Figure 4 Scan to visit School Website
<https://goo.gl/121YpC>

Grade Toppers of Session 2018-19



SANCHI RAWAT

SCORE: 97.6 %

ISHITA RANAKOTI

SCORE: 94.2 %



ANURAG SHARMA

SCORE: 94 %

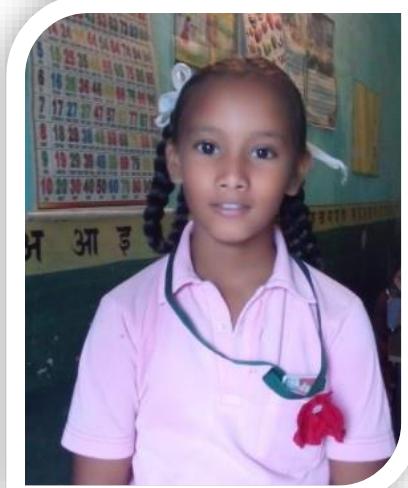


SONAM RAWAT

SCORE: 95 %

KANCHAN RANAKOTI

SCORE: 90 %



लेखों के लिए आमन्त्रण (जनवरी 2020 अंक हेतु) हैप्पी स्कूल – अद्वार्षिक पत्रिका

“हैप्पी स्कूल” राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक ऑनलाइन पत्रिका है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है। समस्त शिक्षक वर्ग से अपेक्षा की जाती है कि आपके विद्यालय में हो रही गतिविधियों (कहानी लेखन, कविता लेखन, चित्रकला व अन्य कोई भी नवाचारी क्रिया-कलाप) को सम्पादक मंडल के साथ साझा करें, जिससे कि हम आपके विद्यालय में हो रहे नवाचारों को पाठक-वर्ग तक पहुंचा सकें। पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य विद्यार्थियों व शिक्षकों की रचनात्मकता व मौलिकता को समाज तक पहुंचाना है।

सलाहकार समिति

श्रीमती सीमा जौनसारी, निदेशक, अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण

श्री आर के कुंवर, निदेशक – प्रारम्भिक शिक्षा, उत्तराखण्ड

श्री एस पी खाली, सहायक निदेशक (प्राथमिक शिक्षा) – गढ़वाल मंडल

श्री मदन सिंह रावत, मुख्य शिक्षा अधिकारी, पौड़ी गढ़वाल

श्री कुंवर सिंह रावत, जिला शिक्षा अधिकारी – प्रारम्भिक शिक्षा

श्री शैलेन्द्र अमोली, उप शिक्षा अधिकारी – यमकेश्वर

डॉ ऐ के नौटियाल, आचार्य, शिक्षा विभाग – हेन ब केन्ट्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल

श्री गणेश बलूनी, अर्जीम प्रेमजी फाउंडेशन (गढ़वाल)

श्री मनोहर जोशी, संकुल समन्वयक - नीलकंठ

श्रीमती लक्ष्मी पोखरियाल, प्रधानाध्यापक – रा आ प्रा ति गंगा भोगपुर

सम्पादकीय समिति

डॉ अतुल बमराड़ा, अकादमिक सम्पादक

रेखा पुरोहित, मुख्य सम्पादक

आशा बिष्ट, सम्पादक

धनेश्वरी रत्नांजलि/पूनम बमराड़ा, सह-सम्पादक

अपने लेख एवं रचनाएँ gmpsgbm@gmail.com पर प्रेषित करें। ज्यादा जानकारी हेतु 7500941108 पर संपर्क करें।



हम, एक पृथ्वी स्कूल हैं

उत्तरी पर्यावरण ट्रीटि
दिल्ली शहरी नगरीय ज़िले के साथ
प्रशिक्षण केंद्र
पर्यावरण के बारे में ज्ञान और
विचार देने के लिए



GOVERNMENT
PRIMARY SCHOOL,
GANGABHOGPUR MALLA